وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿6﴾

६. और धरती पर चलते-फिरते जितने भी जानदार हैं सभी की रोज़ी अल्लाह (तआला) पर है वही उन के रहने की जगह भी जानता है और उन को सौंपे जाने की जगह भी, सभी कुछ खुली किताब में मौजूद है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۗ وَلَئِن قُلْتَ إِنَّكُم مَّبْعُوثُونَ مِن بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿7﴾

७. और (अल्लाह ही) वह है जिस ने छः दिन में आकाशों और धरती को पैदा किया, और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था,[1] ताकि वह तुम्हारा इम्तेहान ले कि तुम में अच्छे अमल वाला कौन है? अगर आप उन से कहें कि तुम लोग मरने के बाद फिर जिन्दा किये जाओगे तो काफ़िर जवाब देंगे कि ये तो केवल खुला जादू ही है।

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَّيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۗ أَلَا يَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿8﴾

८. और अगर हम उन से अज़ाब को कुछ वक़्त तक के लिये मुअख़्ख़र कर दें, तो यह ज़रूर पुकार उठेंगे कि अज़ाब को कौन-सी चीज़ रोके हुई है। सुनो ! जिस दिन वह उनके पास आयेगा फिर उन से टलने वाला नहीं, फिर तो जिसका मज़ाक कर रहे थे, वह उन्हीं पर उलट पड़ेगा।

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ﴿9﴾

९. और अगर हम इंसान को किसी सुख का मज़ा चखा कर फिर उसे उस से ले लें तो वह बहुत मायूस और बहुत नाशुक्रा बन जाता है।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ﴿10﴾

१०. और अगर हम उसे कोई सुख पहुँचायें, उस कठिनाई के बाद जो उसे पहुँच चुकी थी तो वह कहने लगता है कि बस बुराईयाँ मुझ से जाती रहीं।[2] बेशक वह बड़ा ही ख़ुश होकर घमंड करने लगता है।

---

[1] यही बात सहीह हदीस से भी साबित होती है, इसलिए एक हदीस में आता है "अल्लाह तआला ने आकाश और धरती को पैदा करने से पचास हज़ार साल पहले मख़लूक़ की तक़दीर लिखा, उस समय उस का अर्श पानी पर था।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़दर, और देखिये सहीह बुख़ारी, बदउल ख़ल्क़)

[2] यानी समझता है कि कठिनाईयों का दौर ख़त्म हो गया है, अब उसे कोई कठिनाई नही आयेगी।

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحَٰتِ أُولَٰٓئِكَ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ (11)

११. उन के सिवाय जो सब्र करते हैं और नेक कामों में लगे रहते है, उन्हीं लोगों के लिये माफ़ी भी है और बहुत बड़ा बदला भी।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوحَىٰٓ إِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهِۦ صَدْرُكَ أَن يَقُولُوا لَوْلَآ أُنزِلَ عَلَيْهِ كَنزٌ أَوْ جَآءَ مَعَهُۥ مَلَكٌ إِنَّمَآ أَنتَ نَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ وَكِيلٌ (12)

१२. तो शायद कि आप उस वह्यी (प्रकाशना) के किसी हिस्से को छोड़ देने वाले हैं, जो आप की तरफ़ उतारी जाती है और उस से आप का सीना तंगी में है, सिर्फ़ उनकी इस बात पर कि इस पर कोई ख़ज़ाना क्यों नही उतरा? या इस के साथ कोई फ़रिश्ता ही आता, सुन लीजिये ! आप तो केवल डराने वाले ही हैं[1] और हर चीज़ का संरक्षक (निगराँ) केवल अल्लाह तआला है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهِۦ مُفْتَرَيَٰتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ (13)

१३. क्या ये कहते हैं कि इस क़ुरआन को उसी ने गढ़ा है, जवाब दीजिये कि फिर तुम भी इस की तरह दस सूर: गढ़ी हुई ले आओ और अल्लाह के सिवाय जिसे चाहो अपने साथ शामिल भी कर लो अगर तुम सच्चे हो।

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوٓا أَنَّمَآ أُنزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَن لَّآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ (14)

१४. फिर अगर वे तुम्हारी इस बात को क़ुबूल न करें, तो तुम निश्चित रूप से जान लो कि यह क़ुरआन अल्लाह के इल्म के साथ उतारा गया है, और यह कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम मुसलमान होते हो?[2]

---

[1] मूर्तिपूजक नबी ﷺ के बारे में कहा करते थे कि उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरता, या उस की तरफ़ कोई ख़ज़ाना क्यों नही उतार दिया जाता? (सूर: अल-फ़ुरक़ान-८) एक दूसरी जगह पर कहा गया है "हमें इल्म है कि यह लोग आप (ﷺ) के बारे में जो बातें कहते हैं, उन से आप (ﷺ) दुखी होते हैं।" (सूर: अल-हिज्र-९८) इस आयत में उन्हीं बातों के बारे में कहा जा रहा है कि शायद आप (ﷺ) दुखी होते हों, मुमकिन है आप (ﷺ) वह उन्हें सुनाना नापसन्द समझें। लेकिन आप (ﷺ) इन बातों से बेफ़िक्र होकर, उन को अल्लाह की वह्यी (प्रकाशना) सुनायें, उन्हें पसन्द हो या नापसन्द, वे क़ुबूल करें या ना क़ुबूल। आप (ﷺ) का फ़र्ज सिर्फ़ करना और तंबीह है, वह आप (ﷺ) हर हालत में किये जायें।

[2] यानी क्या इस के बाद भी कि तुम इस चुनौती का जवाब देने में लाचार हो, यह मानने के लिये कि यह क़ुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, तैयार नहीं हो और न मुसलमान होने के लिये तैयार हो?

مَن كَانَ يُرِيدُ الْحَيَوٰةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿15﴾

१५. जो इंसान दुनियावी जीवन और उसकी ज़ीनत पर रीझा हुआ हो, हम ऐसों को उनके सभी अमल का (बदला) यहीं पूरी तरह से पहुँचा देते हैं और यहाँ उन्हें कोई कमी नहीं की जाती।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿16﴾

१६ हाँ, यही वे लोग हैं जिन के लिये आख़िरत में आग के सिवाय दूसरा कुछ नहीं, और जो कुछ उन्होंने यहाँ किया होगा वहाँ सब बेकार है और जो कुछ उन के अमल थे वह सब नाश होने वाले हैं।[1]

أَفَمَن كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِن قَبْلِهِ كِتَابُ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿17﴾

१७. वह जो अपने रब की तरफ़ से एक दलील पर हो और उस के साथ अल्लाह की तरफ़ से गवाह हो, और उस से पहले मूसा की किताब (गवाह हो) जो पथ-प्रदर्शक (रहनुमा) और रहमत है (दूसरों की तरह हो सकता है?) यही लोग हैं जो उस पर ईमान रखते हैं, और सभी गुटों में से जो भी इसका इंकारी हो, उसके आख़िरी वादे की जगह नरक है,[2] फिर तू उस में किसी तरह के शक में न हो, बेशक यह तेरे रब की तरफ़ से पूरा का पूरा हक़ है, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमान लाने वाले नहीं होते।

---

[1] इन दो आयतों के बारे में कुछ का ख़्याल है कि इस में मुनाफ़िक लोगों की चर्चा है, कुछ के नजदीक इस से मुराद यहूदी और इसाई हैं और कुछ के नजदीक इस में दुनिया के हरीस लोगों का बयान है, क्योंकि मुनाफ़िक़ भी जो अच्छे अमल करते हैं, अल्लाह तआला उन का बदला उन्हें दुनिया में दे देता है, आख़िरत में उनके लिये सज़ा के सिवाय कुछ न होगा, इस विषय को क़ुरआन मजीद में सूर: बनी इस्राईल आयत १८,२१ और सूर: शूरा आयत २० में बयान किया गया है।

[2] सभी गुटों से मुराद पूरी धरती पर पाये जाने वाले धर्म हैं, यहूदी, इसाई, आगपूजक, बौद्धधर्म, मूर्तिपूजक, काफ़िर और दूसरे, जो भी मोहम्मद ﷺ पर और क़ुरआन पर ईमान नहीं लायेगा, उसका ठिकाना नरक है। यह वही विषय है जिसे इस हदीस में बयान किया गया है "क़सम है उस ताक़त की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, इस उम्मत के जिस यहूदी या इसाई ने भी मेरी नुबूअत के बारे में सुना और फिर मुझ पर ईमान नहीं लाया, वह नरक में जायेगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब वजूबुल ईमान, बिरिसालते नबियेना मोहम्मद ﷺ इला जमीइन्नासे) यह विषय इस से पहले सूर: अल-बक़र: आयत नं॰ ६२ और सूर: निसाअ आयत नं॰ १५० और १५२ में भी गुज़र चुका है।

१८. और उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बांधे, ये लोग अपने रब के सामने पेश किये जायेंगे और सारे गवाह कहेंगे कि ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बांधा, सावधान! अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर।[1]

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۚ أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ ۚ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ (18)

१९. जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उस में ग़लती की खोज कर लेते हैं, यही वह लोग हैं जो आख़िरत का इंकार करते हैं।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ (19)

२०. न ये लोग दुनिया में अल्लाह को हरा सके और न उनका कोई मददगार अल्लाह के सिवाय हुआ, उन के लिये सज़ा दुगनी की जायेगी, न ये सुनने की ताक़त रखते थे और न ये देखते ही थे।

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ ۘ يُضَاعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ۚ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ (20)

२१. यही हैं जिन्होंने अपना नुक़सान आप कर लिया और जिन से अपना बांधा हुआ झूठ खो गया।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (21)

२२. बेशक यही लोग आख़िरत (परलोक) में घाटे में होंगे।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُونَ (22)

२३. बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने काम भी नेकी के किये और अपने रब की तरफ़ झुकते रहे, वही जन्नत में जाने वाले हैं, जहाँ वे हमेशा रहने वाले हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (23)

२४. न दोनों गुटों की मिसाल अंधे-बहरे और देखने-सुनने वाले जैसी है, क्या यह दोनों मिसाल में बराबर हैं? क्या फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيرِ وَالسَّمِيعِ ۚ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ (24)

---

[1] हदीस में इस की तफ़सीर इस तरह आती है कि क़यामत (प्रलय) के दिन अल्लाह तआला एक ईमानवाले से उस के गुनाहों को क़ुबूल करायेगा कि तुझे इल्म है कि तूने फ़्लाँ गुनाह किया था, फ़्लाँ भी किया था, वह ईमान वाला कहेगा हाँ ठीक है। अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि मैंने उन गुनाहों पर दुनिया में भी पर्दा डाल रखा था, जा आज भी उन्हें माफ़ करता हूँ। लेकिन दूसरे लोग या काफ़िरों का मामला ऐसा होगा कि उन्हें गवाहों के सामने पुकारा जायेगा और गवाह यह गवाही देंगे कि यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बांधा था। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: हूद)

२५. और बेशक हम ने नूह (عليه السلام) को उसकी क़ौम की तरफ़ रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा कि मैं तुम्हें वाज़ेह तौर से बाख़बर कर देने वाला हूं।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿25﴾

२६. कि तुम केवल अल्लाह की इबादत ही किया करो,[1] मुझे तो तुम पर दुखदायी दिन के अज़ाब का डर है।

أَن لَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيمٍ ﴿26﴾

२७. तो उसकी क़ौम के काफ़िरों के मुखियाओं ने जवाब दिया कि हम तो तुझे अपनी तरह इंसान ही देखते हैं,[2] और तेरे पैरोकार को भी देखते हैं कि वाज़ेह तौर से सिवाय नीच लोगों के[3] दूसरा कोई नहीं (जो तुम्हारी इत्तेबा कर रहे हैं) हम तो तुम्हारी किसी तरह की फ़ज़ीलत अपने ऊपर नहीं देख रहे, बल्कि हम तो तुझे झूठा समझ रहे हैं।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا نَرَاكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرَاكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ وَمَا نَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿27﴾

२८. (नूह ने) कहा, ऐ मेरी क़ौम वालो ! मुझे बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से मिली निशानी पर हुआ और मुझे उसने अपने पास की (कोई अच्छी) रहमत अता की हो[4]

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَآتَانِي رَحْمَةً مِّنْ عِندِهِ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ أَنُلْزِمُكُمُوهَا وَأَنتُمْ لَهَا كَارِهُونَ ﴿28﴾

---

[1] यह वही तौहीद की दावत है जो हर नबी ने आकर अपनी-अपनी क़ौम को दिया, जिस तरह कहा :

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ﴾

"जो पैग़म्बर हम ने आप से पहले भेजे, उनकी तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) की कि मेरे सिवाय कोई माबूद नहीं, बस मेरी ही इबादत करो।" (सूर: अल-अम्बिया-२५)

[2] यह वही शक है जिसकी तफ़सीर कई जगहों पर की जा चुकी है कि काफ़िरों के नज़दीक इंसानियत के साथ नुबूअत और रिसालत का इकट्ठा होना बड़ा अजीब था, जिस तरह आजकल बिदअत करने वालों को भी अजीब लगता है और वे रसूल (ﷺ) के इंसान होने का इंकार करते हैं।

[3] ईमान वाले चूंकि अल्लाह और रसूल के हुक्मों के सामने अपनी अक़्ल, इरादे और दलील का इस्तेमाल नहीं करते, इसलिये झूठ के पैरोकार यह समझते हैं कि यह मोटी अक़्ल वाले हैं कि अल्लाह का रसूल इन्हें जिस ओर मोड़ देता है ये मुड़ जाते हैं, जिस चीज़ से रोक देता है रूक जाते हैं, यह भी ईमान वालों की बड़ी फ़ज़ीलत है, बल्कि ईमान की ज़रूरी मांग है, लेकिन काफ़िरों और असत्यवादियों (बातिल परस्तों) के नज़दीक यह फ़ज़ीलत भी 'जुर्म' है।

[4] بَيِّنَة से मुराद ईमान और यक़ीन है और रहमत से नुबूअत, जिस से अल्लाह तआला ने नूह (عليه السلام) को विभूषित (सरफ़राज़) किया था।

फिर वह तुम्हारी आँखों में न समाई तो क्या जबरदस्ती उसे तुम्हारे गले में डाल दूँ जबकि तुम उसे नहीं चाहते हो।

وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْـهَلُوْنَ (29)

२९. हे मेरी क़ौम वालो! मैं इसके बदले तुम से कोई धन नहीं माँगता, मेरा बदला तो केवल अल्लाह तआला के पास है, न मैं ईमानवालों को अपने पास से निकाल सकता हूँ,[1] उन्हें अपने रब से मिलना है, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग बेवक़ूफ़ी कर रहे हो।

وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (30)

३०. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर मैं ईमान वालों को अपने पास से निकाल दूँ, तो अल्लाह के मुक़ाबले में मेरी मदद कौन कर सकता है, क्या तुम कुछ भी सोच-विचार नहीं करते?

وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ښ اِنِّىْٓ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ (31)

३१. और मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, (सुनो) मैं ग़ैब का इल्म भी नहीं रखता, न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, न मेरा यह क़ौल है कि जिन पर तुम्हारी निगाह अपमान से पड़ रही है उन्हें अल्लाह (तआला) कोई अच्छी तरह देगा ही नहीं, उन के दिल में जो कुछ है अल्लाह अच्छी तरह जानता है, अगर मैं ऐसा कहूँ तो बेशक मेरी भी गिनती ज़ालिमों में हो जायेगी।

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (32)

३२. (क़ौम के लोगों ने) कहा : ऐ नूह! तू हम से बहस और बहुत बहस कर चुका, अब तो तू जिस चीज़ से हमें डरा रहा है, वही हमारे पास ले आ अगर तू सच्चा है।[2]

---

[1] इस से मालूम होता है कि नूह ﷺ की क़ौम के सरदारों ने भी समाज में कमज़ोर समझे जाने वाले ईमान वालों को हज़रत नूह से अपनी सभा या अपनी नज़दीकी से दूर करने की माँग की होगी, जिस तरह मक्का के सरदारों ने रसूलुल्लाह ﷺ से इस तरह की माँग की थी।

[2] यह वही बेवक़ूफ़ी है जिस को भटके हुए लोग करते आये हैं कि वे अपने पैग़म्बर से कहते रहे अगर तू सच्चा है तो हम पर अज़ाब उतारकर हमें बरबाद करवा दे, अगर उन में अक़्ल होती तो वे कहते कि अगर तू सच्चा है और हक़ीक़त में अल्लाह का रसूल है तो हमारे लिये भी दुआ कर कि अल्लाह तआला हमारे दिल भी खोल दे ताकि हम इसे अपना लें।

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُم بِهِ اللَّهُ إِن شَاءَ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ ﴿33﴾

३३. जवाब दिया कि उसे भी अल्लाह (तआला) ही लायेगा अगर वह चाहे, और हाँ! तुम उसे मजबूर नहीं कर सकते।[1]

وَلَا يَنفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدتُّ أَنْ أَنصَحَ لَكُمْ إِن كَانَ اللَّهُ يُرِيدُ أَن يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿34﴾

३४. और तुम्हें मेरी नसीहत कुछ भी फायेदा नहीं पहुँचा सकती, चाहे मैं जितना ही तुम्हारा ख़ैरख़्वाह क्यों न हूँ, अगर अल्लाह की मर्ज़ी तुम्हें भटकाने की हो, वही तुम सब का रब है और उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيَّ إِجْرَامِي وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تُجْرِمُونَ ﴿35﴾

३५. क्या ये कहते हैं कि उसे ख़ुद उसी ने गढ़ लिया है? तो जवाब दो कि अगर मैंने उसे गढ़ लिया हो तो मेरा गुनाह मुझ पर है और मैं उन गुनाहों से अलग हूँ जिन को तुम कर रहे हो।

وَأُوحِيَ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَن يُؤْمِنَ مِن قَوْمِكَ إِلَّا مَن قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿36﴾

३६. और नूह की तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) भेजी गयी कि तेरी क़ौम में जो भी ईमान ला चुके उन के सिवाय अब कोई ईमान लायेगा ही नहीं, फिर तो उन के अमलों पर दुखी न हो।

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُم مُّغْرَقُونَ ﴿37﴾

३७. और एक नाव हमारी आँखों के सामने और हमारी वह्यी (प्रकाशना) से तैयार कर,[2] और ज़ालिमों के बारे में हम से कोई बात न कर, वे पानी में डूबो दिये जाने वाले हैं।[3]

---

[1] यानी अज़ाब का आना पूरी तरह से अल्लाह की मर्ज़ी पर है, यह नहीं कि जब मैं चाहूँ तुम पर अज़ाब आ जाये, लेकिन जब अल्लाह अज़ाब का फ़ैसला कर लेगा या भेज देगा तो फिर उस को रोकने वाला कोई नहीं है।

[2] "हमारी आँखों के सामने" का मतलब है "हमारी देख-भाल में" लेकिन यह आयत अल्लाह तआला के लिये आँख होने के गुण को बताती है जिस पर अक़ीदा रखना फ़र्ज़ है, और "हमारी वह्यी (प्रकाशना) से" का मतलब उसकी लम्बाई-चौड़ाई आदि की जो हालत हम ने बतलायी है, उस तरह उसे बना। इस जगह पर कुछ मुफ़स्सिरों ने नाव की लम्बाई-चौड़ाई, उस के तलों और किस तरह की लकड़ी और दूसरे सामान उस में इस्तेमाल किया गया, उस का तफ़सीली बयान किया है, जो वाज़ेह है कि किसी दलील पर आधारित (मबनी) नहीं है। उसका सही तफ़सीली इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है।

[3] कुछ ने इस से मुराद हज़रत नूह के बेटे और बीवी को लिया है, जो ईमान नहीं लाये थे और डूबने वालों में से थे, कुछ ने इस से डूबने वाली पूरी उम्मत लिया है, और मतलब यह है कि इन के लिये मौक़ा देने की माँग न करना क्योंकि अब इन की तबाही का वक़्त आ गया है या यह

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ﴿38﴾

३८. वह (नूह) नाव बनाने लगे, उसकी क़ौम के जो भी गुट के लोग उस के पास से गुज़रते वे उस का मज़ाक़ उड़ाते, वह कहते अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो तो हम भी तुम पर एक दिन हँसेंगे जैसे तुम मज़ाक़ कर रहे हो।

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿39﴾

३९. तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि किस पर अज़ाब आना है, जो उसे ज़लील करे और उस पर दायमी अज़ाब उतर जाये।

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلٌ ﴿40﴾

४०. यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और तन्दूर उबलने लगा,[1] हम ने कहा कि इस नाव में हर तरह के जोड़े दोहरे सवार करा ले[2] और अपने घर के लोगों को भी, सिवाय उन के जिन पर पहले से बात पड़ चुकी है, और सभी ईमान वालों को भी, उस के साथ ईमान लाने वाले बहुत ही कम थे।

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿41﴾

४१. और नूह ने कहा कि इस नाव में बैठ जाओ अल्लाह ही के नाम से इसका चलना और ठहरना है,[3] बेशक मेरा रब बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادٰى

४२. और वह नाव उन्हें पहाड़ों जैसी लहरों में लेकर जा रही थी,[4] और नूह ने अपने बेटे को

मतलब है कि उन की तबाही के लिये जल्दी न करें, मुक़र्रर वक़्त में यह सब डूब जायेंगे। (फ़तहुल क़दीर)

[1] इस से कुछ ने रोटी पकाने वाला तन्दूर, कुछ ने मुक़र्रर मक़ाम जैसे ऐनुलवर्द:, और कुछ ने धरती का तल लिया है। हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने इसी आख़िरी मतलब को तरजीह दी है यानी पूरी ज़मीन चश्मों की तरह उबल पड़ी, ऊपर से आकाश की वर्षा ने बाक़ी बची कमी को पूरा कर दिया।

[2] इस से मुराद मर्द और औरत यानी नर और मादा है, इस तरह हर जानदार का जोड़ा नाव में रख लिया गया, और कुछ कहते हैं कि पौदे भी रखे गये थे।

[3] यानी अल्लाह ही के नाम से उस के पानी की सतह पर चलना और उसी के नाम पर रूकना है, इस से एक मक़सद ईमान वालों को तसल्ली देना और हिम्मत देना था कि किसी तरह के डर के बिना नाव में सवार हो जाओ, अल्लाह ही इस नाव का मुहाफ़िज़ और रखवाला है, उसी के हुक्म से चलेगी और उसी के हुक्म से ठहरेगी।

[4] यानी जब धरती पर पानी था, यहाँ तक कि पहाड़ भी डूबे हुए थे, यह नाव हज़रत नूह और उन के साथियों को अपने अंदर महफ़ूज़ लिये अल्लाह के हुक्म से और उस की हिफ़ाज़त में पहाड़ की तरह चल रही थी, वरना इतने तूफ़ान वाले पानी में नाव की क्या अहमियत होती है?

نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُن مَّعَ الْكٰفِرِينَ ﴿42﴾

जो एक किनारे पर था पुकार कर कहा, ऐ मेरे प्यारे बच्चे! हमारे साथ सवार हो जा और काफ़िरों में शामिल न रह।[1]

قَالَ سَاٰوِيْٓ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ۭ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ ﴿43﴾

४३. उस ने जवाब दिया कि मैं तो किसी ऊँचे पहाड़ की पनाह में आ जाऊँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा, नूह ने कहा आज अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला कोई नहीं, वही केवल बचेंगे जिन पर अल्लाह की रहमत हुई, उसी वक़्त उन के बीच लहर आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

وَقِيْلَ يٰٓاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿44﴾

४४. और कह दिया गया कि ऐ धरती ! अपने पानी को निगल जा,[2] और ऐ आकाश ! बस कर थम जा, उसी वक़्त पानी सुखा दिया गया और काम पूरा कर दिया गया, और नाव जूदी नामक पहाड़[3] पर जा लगी, और कहा गया कि नाइंसाफ़ी करने वालों पर धिक्कार (लानत) उतरे।

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿45﴾

४५. और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब ! मेरा बेटा तो मेरे घर वालों मे से है, बेशक तेरा वादा पूरी तरह से सच्चा है और तू सभी हाकिमों से बेहतर हाकिम है।[4]

قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ عَمَلٌ

४६. (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया ऐ नूह! बेशक वह तेरे अहल से नहीं है,[5] उस के काम

---

[1] यह हज़रत नूह का चौथा बेटा था, जिस की कुन्नियत (उपाधि) 'कन्आन' और नाम 'याम' था, उस से हज़रत नूह ने इसरार किया कि मुसलमान हो जा और काफ़िरों के साथ शामिल होकर डूबने वालों में न हो।

[2] निगलने का इस्तेमाल जानवर के लिये होता है कि वह अपने मुंह का कौर निगल जाता है, यहाँ पानी के सूखने को निगल जाने से तुलना करने में इस हिक्मत का इल्म होता है कि पानी धार-धार नहीं सूखा, बल्कि अल्लाह तआला के हुक्म से धरती ने फ़ौरन अपने अंदर सारा पानी इस तरह निगल लिया जिस तरह जानवर कौर निगल जाता है।

[3] जूदी पहाड़ का नाम है, जो कुछ लोगों के क़ौल के मुताबिक़ ईराक के नगर मौसिल के क़रीब है, हज़रत नूह की क़ौम भी इसी के क़रीब आबाद थी।

[4] हज़रत नूह ने शायद अपने बेटे की मुहब्बत के जज़्बे से प्रेरित (बेख़ुद) होकर अल्लाह के दरबार में दुआ की और कुछ मुफ़स्सिर कहते हैं कि उन्हें यह उम्मीद थी कि शायद यह मुसलमान हो जायेगा, इसलिये उस के बारे में यह दुआ की।

[5] हज़रत नूह ने अपनी ख़ानदानी क़ुरबत के सबब उसे अपना बेटा कहा था, लेकिन अल्लाह

बिल्कुल नापसंदीदा हैं[1] तुझे कभी भी वह चीज नहीं मांगनी चाहिये जिसका तुझे तनिक भी इल्म न हो,[2] मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि तू जाहिलों में से अपनी गिन्ती कराने से रूक जा।

غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۖ إِنِّي أَعِظُكَ أَن تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿46﴾

४७. (नूह ने) कहा ऐ मेरे रब ! मैं तेरी ही पनाह चाहता हूँ, इस बात से कि तुझ से वह माँगू जिसका मुझे इल्म ही न हो, अगर तू मुझे माफ़ नहीं करेगा और तू मुझ पर रहम न करेगा तो मैं घाटा उठाने वालों में हो जाऊँगा।

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۖ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُن مِّنَ الْخَاسِرِينَ ﴿47﴾

४८. कहा गया कि हे नूह ! हमारी तरफ़ से सलामती और उन बरकतों के साथ उतर जो तुझ पर है और तेरे साथ की बहुत सी उम्मतों पर, और बहुत सी वह उम्मत होंगी जिन्हें हम लाभ तो जरूर पहुँचायेंगे, लेकिन फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दुखदायी अज़ाब भी पहुँचेगा।

قِيلَ يَا نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ أُمَمٍ مِّمَّن مَّعَكَ ۚ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُم مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿48﴾

४९. यह ख़बर ग़ैब की ख़बरों में से है जिनकी वह्यी (प्रकाशना) हम आप की तरफ़ करते हैं, इन्हें इस से पहले न आप जानते थे और न आप की क़ौम, इसलिये आप सब्र करें, यक़ीन कीजिये कि नतीजा परहेज़गारों के लिये ही है।

تِلْكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ ۖ مَا كُنتَ تَعْلَمُهَا أَنتَ وَلَا قَوْمُكَ مِن قَبْلِ هَٰذَا ۖ فَاصْبِرْ ۖ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿49﴾

तआला ने ईमान की बुनियाद पर दीन की नजदीकी के क़ानून के मुताबिक़ इस बात को नकारा कि वह तेरे अहल से है, इसलिए कि एक नबी का असल परिवार तो वही है जो उस पर ईमान लाये, चाहे वह कोई भी हो, और अगर ईमान न लाये, तो चाहे वह नबी का बाप हो, बेटा हो या पत्नी, वह नबी के परिवार का सदस्य नहीं।

[1] यह अल्लाह तआला ने उसके सबब का बयान किया है, इस से मालूम हुआ कि जिस के पास ईमान और नेक अमल नहीं होगा, उसे अल्लाह के अज़ाब से अल्लाह का पैग़म्बर भी बचाने की ताक़त नहीं रखता। आजकल लोग पीरों, फ़क़ीरों और गद्दी नशीनों (पुजारियों) से सम्बन्ध (तआल्लुक़) होने को ही नजात के लिये काफ़ी मानते हैं और नेक काम करने की ज़रूरत नहीं समझते, जबकि नेकी के काम के बिना नबी के साथ ख़ानदानी रिश्ता भी काम नहीं आता तो ये सम्बंध क्या काम आयेंगे?

[2] इस से मालूम हुआ कि नबी को ग़ैब का इल्म नहीं होता, उसको उतना ही इल्म होता है, जितना वह्यी (प्रकाशना) के ज़रिये अल्लाह तआला उसे अता करता है, अगर हज़रत नूह को पहले इल्म होता कि उनकी दुआ क़ुबूल न होगी, तो बेशक वह उस से बचते।

وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟ ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥٓ ۖ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُفْتَرُونَ (50)

५०. और आद क़ौम की तरफ़ उन के भाई हूद को हम ने भेजा, उस ने कहा मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह ही की इबादत करो, उस के सिवाय कोई माबूद नही, तुम तो सिर्फ़ बुहतान लगा रहे हो।

يَٰقَوْمِ لَآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ۖ إِنْ أَجْرِىَ إِلَّا عَلَى ٱلَّذِى فَطَرَنِىٓ ۚ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (51)

५१. मेरी क़ौम के लोगो! मैं तुम से इस की कोई उजरत नहीं माँगता, मेरा बदला उस के ऊपर है जिस ने मुझे पैदा किया है, तो क्या फिर भी तुम अक़्ल से काम नहीं लेते।

وَيَٰقَوْمِ ٱسْتَغْفِرُوا۟ رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوٓا۟ إِلَيْهِ يُرْسِلِ ٱلسَّمَآءَ عَلَيْكُم مِّدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَىٰ قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا۟ مُجْرِمِينَ (52)

५२. और हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपने रब से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगो और उस के दरबार में तौबा करो ताकि वह वर्षा वाले बादल तुम पर भेज दे, और तुम्हारी ताक़त में और इज़ाफ़ा करे, और तुम गुनहगार होकर मुँह न मोड़ो।

قَالُوا۟ يَٰهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِىٓ ءَالِهَتِنَا عَن قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ (53)

५३. उन्होंने कहा हे हूद! तू हमारे पास कोई दलील तो लाया नहीं और हम केवल तेरे कहने से अपने देवताओं को छोड़ने वाले नहीं और न हम तुझ पर ईमान लाने वाले हैं।

إِن نَّقُولُ إِلَّا ٱعْتَرَىٰكَ بَعْضُ ءَالِهَتِنَا بِسُوٓءٍ ۗ قَالَ إِنِّىٓ أُشْهِدُ ٱللَّهَ وَٱشْهَدُوٓا۟ أَنِّى بَرِىٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ (54)

५४. बल्कि हम तो यही कहते हैं कि तू हमारे किसी देवता के बुरे झपेटे में आ गया है, उस ने जवाब दिया कि मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं तो अल्लाह के सिवाय उन सब से अलग हूँ, जिन्हें तुम साझीदार बना रहे हो।

مِن دُونِهِۦ ۖ فَكِيدُونِى جَمِيعًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونِ (55)

५५. अच्छा तुम सब मिल कर मेरे ख़िलाफ़ बुराई कर लो और मुझे कभी भी मौक़ा न दो।

إِنِّى تَوَكَّلْتُ عَلَى ٱللَّهِ رَبِّى وَرَبِّكُم ۚ مَّا مِن دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ ءَاخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَآ ۚ إِنَّ رَبِّى عَلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ (56)

५६. मेरा भरोसा केवल अल्लाह तआला पर ही है, जो मेरा रब और तुम सब का रब है, जितने भी चलने-फिरने वाले हैं सबका मस्तक (पेशानी) वही थामे हुए है, बेशक मेरा रब बिल्कुल सीधे रास्ते पर है।

فَإِن تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُم مَّا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ ۚ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّونَهُ شَيْئًا ۚ إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ (57)

५७. फिर भी तुम मुंह फेरते हो तो फेरो, मैं तो तुम्हें वह पैग़ाम पहुँचा चुका जो देकर मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया था, मेरा रब तुम्हारी जगह पर दूसरे लोगों को कर देगा और तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, बेशक मेरा रब हर चीज का मुहाफ़िज है।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَنَجَّيْنَاهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ (58)

५८. और जब हमारा हुक्म आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उसके मुसलमान साथियों को अपनी ख़ास रहमत से नजात अता की, और हम ने उन सब को घोर (सख़्त) अज़ाब से बचा लिया।[1]

وَتِلْكَ عَادٌ ۖ جَحَدُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ (59)

५९. यह थी आद की क़ौम, जिन्होंने अपने रब की आयतों को नकार दिया और उस के रसूलों की नाफ़रमानी की[2] और हर सरकश नाफ़रमान के हुक्मों का पालन किया।

وَأُتْبِعُوا فِي هَٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ أَلَا إِنَّ عَادًا كَفَرُوا رَبَّهُمْ ۗ أَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُودٍ (60)

६०. और दुनिया में भी उन के पीछे धिक्कार (लानत) लगा दी गई और क़यामत (प्रलय) के दिन भी,[3] देख लो आद की क़ौम ने अपने रब से कुफ़्र (इंकार) किया, हूद की क़ौम आद पर लानत हो।

---

[1] सख़्त अज़ाब से मुराद वही तेज हवा का अज़ाब है, जिस के ज़रिये हज़रत हूद की क़ौम 'आद' को तबाह कर दिया गया और जिस से हज़रत हूद और उन पर ईमान लाने वालों को बचा लिया गया।

[2] 'आद' की ओर केवल एक नबी हज़रत हूद ही भेजे गये थे, लेकिन यहाँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि उन्होंने रसूलों की नाफ़रमानी की। इस से या तो यह मतलब हो कि एक रसूल को झुठलाना यह हुआ जैसे कि सभी को झुठलाया है, क्योंकि सभी रसूलों पर ईमान लाना फ़र्ज है या यह मतलब है कि यह समाज अपने कुफ़्र और इंकार में इतनी बढ़ गयी थी कि अगर हज़रत हूद के बाद कई रसूल भी भेजते तो यह समुदाय (क़ौम) सब को झुठलाता और इस से कभी यह उम्मीद नही थी कि वह किसी भी रसूल पर ईमान ले आता, या मुमकिन है कि और भी नबी भेजे गये हों और उस समुदाय ने हर एक को झुठलाया हो।

[3] लानत का मतलब है अल्लाह की रहमत से दूरी, नेकी के कामों से महरूम और लोगों की तरफ़ से लानत और बिलगाव (मलामत), दुनिया में यह लानत इस तरह कि ईमानवालों में इन का बयान हमेशा लानत और बिलगाव के रूप में होगा और क़यामत मे इस तरह कि वहाँ सभी के सामने ज़िल्लत और रुसवाई का सामना करेंगे और अल्लाह के अज़ाब में फसेंगे।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَٰلِحًا ۚ قَالَ يَٰقَوْمِ ٱعْبُدُوا۟
ٱللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ هُوَ أَنشَأَكُم مِّنَ
ٱلْأَرْضِ وَٱسْتَعْمَرَكُمْ فِيهَا فَٱسْتَغْفِرُوهُ ثُمَّ تُوبُوٓا۟
إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّى قَرِيبٌ مُّجِيبٌ ﴿61﴾

६१. और समूद की क़ौम की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा, उस ने कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया है,[1] और उसी ने तुम्हें इस धरती पर बसाया है, इसलिए तुम उस से माफ़ी माँगो और उस की तरफ़ तौबा करो, बेशक मेरा रब तौबा को क़ुबूल करने वाला निकट है।

قَالُوا۟ يَٰصَٰلِحُ قَدْ كُنتَ فِينَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَآ ۖ
أَتَنْهَىٰنَآ أَن نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ ءَابَآؤُنَا وَإِنَّنَا لَفِى
شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَآ إِلَيْهِ مُرِيبٍ ﴿62﴾

६२. उन्होंने कहा ऐ सालेह! इस से पहले हम तुम से बहुत-सी उम्मीदें लगाये हुए थे, क्या तू हमें उनकी इबादत से रोकता है, जिनकी पूजा-अर्चना (इबादत) हमारे बाप-दादा करते चले आये, हमें तो इस दीन में शक है, जिस की तरफ़ तू हमें बुला रहा है।[2]

قَالَ يَٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّى
وَءَاتَىٰنِى مِنْهُ رَحْمَةً فَمَن يَنصُرُنِى مِنَ ٱللَّهِ
إِنْ عَصَيْتُهُۥ ۖ فَمَا تَزِيدُونَنِى غَيْرَ تَخْسِيرٍ ﴿63﴾

६३. उस ने जवाब दिया कि हे मेरी क़ौम के लोगो! ज़रा बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से किसी ख़ास दलील पर हुआ और उस ने मुझे अपने पास से रहमत अता की हो, फिर अगर मैंने उस की नाफ़रमानी की तो कौन है जो उस के सामने मेरी मदद करे? तुम तो मेरे नुक़सान ही में इज़ाफ़ा कर रहे हो।

---

[1] यानी शुरू में तुम्हें धरती से पैदा किया, वह इस तरह कि तुम्हारे बाप आदम की पैदाइश मिट्टी से हुई और सभी इंसान आदम के वंश में पैदा हुए, इस तरह सभी इंसानों की पैदाइश धरती से हुई, या इस का मतलब है कि तुम जो कुछ खाते-पीते हो सब धरती से पैदा होता है और उसी ख़ूराक से वीर्य (मनी) बनता है, जो माँ के गर्भाशय (रिहम) में जाकर इंसान के वजूद का सबब बनता है।

[2] यानी पैग़म्बर अपनी क़ौम में चूँकि किरदार, अख़लाक़, इंसाफ़ और सच्चाई में बेहतर होता है, इसलिये क़ौम की उस से अच्छी उम्मीदें वाबस्ता होती हैं, इसी सबब हज़रत सालेह की क़ौम ने भी उन से यह कहा, लेकिन तौहीद की दावत देते ही उन की उम्मीदों का यह केन्द्र (मरकज़) उनकी आँखों का काँटा बन गया और उस दीन में शक का इज़हार किया जिसकी तरफ़ हज़रत सालेह उन्हें बुला रहे थे, यानी दीन तौहीद का।

६४. और ऐ मेरी क़ौम वालो! यह अल्लाह की भेजी हुई ऊँटनी है, जो तुम्हारे लिये एक मोजिज़ा है, अब तुम इसे अल्लाह की धरती पर खाती हुई छोड़ दो और उसे किसी तरह की तकलीफ़ न पहुँचाओ, वरना जल्द ही तुम्हें अज़ाब पकड़ लेगा।[1]

وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ ﴿64﴾

६५. फिर भी उन लोगों ने उस ऊँटनी के पैर काट कर (मार डाला), इस पर सालेह ने कहा कि अच्छा तो तुम अपने घरों में तीन दिन तक रह लो, यह वादा झूठा नहीं है।

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ۭ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ ﴿65﴾

६६. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हम ने सालेह और उन पर ईमान लाने वालों को अपनी रहमत से उस से भी बचा लिया और उस दिन के अपमान से भी, बेशक तुम्हारा रब ताक़त वाला और ज़बरदस्त है।

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِىِٕذٍ ۭ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ﴿66﴾

६७. और ज़ालिमों को बड़ी तेज़ कड़क ने आ दबोचा, फिर तो वह अपने घरों में मुँह के बल मरे पड़े हुए रह गये।

وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿67﴾

६८. इस तरह कि जैसे वे वहाँ कभी आबाद न थे होशियार रहो कि समूद की क़ौम ने अपने रब से कुफ़्र किया, सुन लो! उन समूद वालों पर लानत है।

كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۭ اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ﴿68﴾

६९. और हमारे भेजे हुए रसूल इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर पहुँचे[2] और सलाम कहा

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى

---

[1] यह वही ऊँटनी है जो अल्लाह तआला ने उन की माँग पर उनकी आँखों के सामने एक पहाड़ या चट्टान से निकाली, इसीलिये उसे 'अल्लाह की ऊँटनी' कहा गया है, क्योंकि वह सिर्फ़ अल्लाह के हुक्म से चमत्कारिक (मोजिज़ाना) रूप से ख़िलाफ़े आदत ज़ाहिर हुई थी, उस के लिये उन्हें कह दिया गया था कि इसे तकलीफ़ न पहुँचाओ, वरना तुम अल्लाह के अज़ाब की पकड़ में आ जाओगे।

[2] यह हक़ीक़त में हज़रत लूत और उनकी क़ौम की घटना का एक हिस्सा है, हज़रत लूत, हज़रत इब्राहीम के चाचा के बेटे थे, हज़रत लूत की बस्ती 'मृत्यु सागर' के दक्षिण-पूर्व में थी, जबकि हज़रत इब्राहीम ﷺ फ़िलिस्तीन में निवास कर रहे थे, जब हज़रत लूत की क़ौम को ख़त्म करने का फ़ैसला कर लिया गया तो उनकी तरफ़ फ़रिश्ते भेजे गये, ये फ़रिश्ते लूत की क़ौम की तरफ़ जाते वक़्त रास्ते में हज़रत इब्राहीम ﷺ के पास ठहरे और उन्हें पुत्र की ख़ुशख़बरी दी।

قَالُوا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ ﴿69﴾

उन्होंने भी सलाम का जवाब दिया और बिना किसी ताख़ीर के गाय का भूना हुआ बच्चा ले आये।[1]

فَلَمَّا رَاٰۤ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ اِنَّاۤ اُرْسِلْنَاۤ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ﴿70﴾

७०. अब जो देखा कि उन के तो हाथ भी उसकी तरफ़ नहीं पहुँच रहे, तो उन्हें अंजान पाकर दिल ही दिल में उन से ख़ौफ़ज़दा होने लगे[2] उन्होंने कहा डरो नहीं, हम तो लूत की क़ौम की तरफ़ भेजे हुए आये हैं।

وَامْرَاَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِاِسْحٰقَ ۙ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ ﴿71﴾

७१. और उसकी बीवी जो खड़ी हुई थी वह हँस दी[3] तो हम ने उसे इसहाक़ की और उस के बाद याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी।

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿72﴾

७२. वह कहने लगी आह बदनसीबी! मेरे यहाँ औलाद हो सकती है, मैं ख़ुद बुढ़िया और मेरे शौहर भी बड़ी उम्र के हैं, यह बेशक बड़ी ताज्जुब की बात है।[4]

---

[1] हज़रत इब्राहीम मेहमानों का बहुत सत्कार (मेहमानी) करते थे, वह यह नहीं समझ सके कि यह फ़रिश्ते हैं जो इंसान की शक्ल में आये हैं और खाते-पीते नहीं हैं बल्कि उन्होंने उन्हें मेहमान समझा और फ़ौरन मेहमानों की सेवा-सत्कार के लिये बछड़े का भुना हुआ गोश्त उन की सेवा में प्रस्तुत (पेश) किया, इस से यह भी पता चलता है कि मेहमानों से पूछने की ज़रूरत नहीं बल्कि जो मिले ख़िदमत में पेश कर दिया जाये।

[2] हज़रत इब्राहीम ने जब देखा कि उन के हाथ खाने की चीज़ों की तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं तो उन्हें डर महसूस हुआ, कहते हैं कि उन के यहाँ यह बात मशहूर थी कि आया हुआ मेहमान अगर खाने का फ़ायेदा न उठाये तो समझा जाता था कि आने वाला मेहमान अच्छे इरादे से नहीं आया है, इस से यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह के पैग़म्बरों को ग़ैब का इल्म नहीं होता, अगर इब्राहीम ﷺ ग़ैब के जानने वाले होते तो बछड़े का भुना हुआ गोश्त भी न लाते और उन से डरते भी नहीं।

[3] हज़रत इब्राहीम की बीवी क्यों हँसी ? कुछ लोग कहते हैं कि लूत की क़ौम के फ़साद से वह भी अवगत थी, उन की तबाही की ख़बर पाकर वह भी ख़ुश हुई। कुछ कहते हैं कि इसलिये हँसी आयी कि देखो आकाश से उन की तबाही का फ़ैसला हो चुका है और यह क़ौम अब भी बेफ़िक्र है, और कुछ कहते हैं कि इस हँसने का सम्बन्ध उस ख़ुशख़बरी से है जो फ़रिश्तों ने इस बूढ़े जोड़े को दी।

[4] यह बीवी हज़रत सारह थीं, जो ख़ुद भी बूढ़ी थीं और उनके शौहर हज़रत इब्राहीम भी बूढ़े थे, इसलिये ताज्जुब एक आम बात थी, जिसे उन्होंने ज़ाहिर किया।

७३. (फ़रिश्तों ने) कहा कि क्या तू अल्लाह की क़ुदरत से ताज्जुब कर रही है, तुम पर हे इस घर के लोगो! अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें उतरे,[1] बेशक अल्लाह ही के लिये सारी हम्द और शान हैं।

قَالُوٓا أَتَعۡجَبِينَ مِنۡ أَمۡرِ ٱللَّهِ رَحۡمَتُ ٱللَّهِ وَبَرَكَٰتُهُۥ عَلَيۡكُمۡ أَهۡلَ ٱلۡبَيۡتِ إِنَّهُۥ حَمِيدٞ مَّجِيدٞ (73)

७४. जब इब्राहीम का डर ख़त्म हो गया और उसे ख़ुशख़बरी भी पहुँच चुकी तो हम से लूत की क़ौम के बारे में कहने सुनने लगे ।[2]

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنۡ إِبۡرَٰهِيمَ ٱلرَّوۡعُ وَجَآءَتۡهُ ٱلۡبُشۡرَىٰ يُجَٰدِلُنَا فِي قَوۡمِ لُوطٍ (74)

७५. बेशक इब्राहीम बहुत साबिर और नरम दिल और अल्लाह की तरफ़ झुकने वाले थे।

إِنَّ إِبۡرَٰهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّٰهٞ مُّنِيبٞ (75)

७६. हे इब्राहीम! इस इरादे को छोड़ दो, आप के रब का हुक्म आ पहुँचा है, और उन पर न लौटाये जाने वाले अज़ाब ज़रूर आने वाले हैं।

يَٰٓإِبۡرَٰهِيمُ أَعۡرِضۡ عَنۡ هَٰذَآ إِنَّهُۥ قَدۡ جَآءَ أَمۡرُ رَبِّكَ وَإِنَّهُمۡ ءَاتِيهِمۡ عَذَابٌ غَيۡرُ مَرۡدُودٖ (76)

७७. और जब हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते लूत के पास पहुँचे तो वह उन के सबब बहुत दुखी हो गये, और दिल ही दिल में दुखी होने लगे और कहने लगे कि आज का दिन बहुत दुखों का दिन है।

وَلَمَّا جَآءَتۡ رُسُلُنَا لُوطٗا سِيٓءَ بِهِمۡ وَضَاقَ بِهِمۡ ذَرۡعٗا وَقَالَ هَٰذَا يَوۡمٌ عَصِيبٞ (77)

७८. और उसकी क़ौम उसकी तरफ़ दौड़ती हुई आई, वह तो पहले ही से बुराईयों में लीन थी, (लूत ने) कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगो! ये हैं मेरी बेटियाँ जो तुम्हारे लिये बहुत पाक है, अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के बारे में रुस्वा न करो, क्या तुम में एक भी भला आदमी नहीं है।

وَجَآءَهُۥ قَوۡمُهُۥ يُهۡرَعُونَ إِلَيۡهِ وَمِن قَبۡلُ كَانُواْ يَعۡمَلُونَ ٱلسَّيِّـَٔاتِ قَالَ يَٰقَوۡمِ هَٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطۡهَرُ لَكُمۡ فَٱتَّقُواْ ٱللَّهَ وَلَا تُخۡزُونِ فِي ضَيۡفِيٓ أَلَيۡسَ مِنكُمۡ رَجُلٞ رَّشِيدٞ (78)

---

[1] हज़रत इब्राहीम की बीवी को यहाँ पर फ़रिश्तों ने أهل بيت (अहले बैत) (घर वाले) कहा है और उन्हें बहुवचन (जमा) عليكم से मुख़ातब किया है, जिस से एक बात तो यह साबित हो गई कि 'अहले बैत' में किसी भी इंसान की बीवी सब से पहले शामिल होती है, दूसरी यह कि अहले बैत के लिए बहुवचन का इस्तेमाल करना भी जायेज़ है। जैसाकि सूर: अहज़ाब आयत नं॰ ३३ में अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ की पाकीज़ा बीवियों को भी अहले बैत कहा है और उन्हें पुरूषवाचक बहुवचन सर्वनाम (जमा-मुज़क्कर) से ख़िताब भी किया है।

[2] इस बातचीत से मुराद यह है कि हज़रत इब्राहीम ने फ़रिश्तों से कहा कि जिस बस्ती को तबाह करने तुम जा रहे हो उसी में हज़रत लूत भी मौजूद हैं, जिस पर फ़रिश्तों ने जवाब दिया "हम जानते हैं कि लूत भी वहीं रहते हैं, लेकिन हम उन को और उन के परिवार को सिवाय उन की बीवी के बचा लेंगे।" (सूर: अल-अनकबूत, ३२)

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِیْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِیْدُ ﴿79﴾

७९. उन्होंने जवाब दिया कि तू अच्छी तरह जानता है कि हमें तो तेरी बेटियों पर कोई हक़ ही नहीं और तू हमारी असल मर्जी से अच्छी तरह वाक़िफ़ है।

قَالَ لَوْ اَنَّ لِیْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِیْۤ اِلٰی رُكْنٍ شَدِیْدٍ ﴿80﴾

८०. (लूत ने) कहा कि काश कि मुझ में तुम से लड़ने की ताक़त होती या मैं किसी मजबूत पनाह में होता।

قَالُوْا یٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ یَّصِلُوْۤا اِلَیْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّیْلِ وَلَا یَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ اِنَّهٗ مُصِیْبُهَا مَاۤ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ؕ اَلَیْسَ الصُّبْحُ بِقَرِیْبٍ ﴿81﴾

८१. अब (फ़रिश्तों ने) कहा हे लूत! हम तेरे रब के भेजे हुए हैं, नामुमकिन है ये कि तुझ तक पहुँच जायें, बस तू अपने घरवालों को लेकर कुछ रात रहते निकल खड़ा हो, तुम में से किसी को मुड़ कर भी नहीं देखना चाहिये, सिवाय तेरी बीवी के, इसलिये कि उसे भी वही पहुँचने वाला है जो सब को पहुँचेगा, बेशक उनके वादे का वक़्त सुबह का है, क्या सुबह बिल्कुल क़रीब नहीं?

فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِیَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا عَلَیْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّیْلٍ ۙ۬ مَّنْضُوْدٍ ﴿82﴾

८२. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हम ने उस बस्ती को उलट-पलट कर दिया, ऊपर का हिस्सा नीचे कर दिया और उन पर कंकड़ीले पत्थरों की बारिश की जो तह पर तह थे।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ؕ وَمَا هِیَ مِنَ الظّٰلِمِیْنَ بِبَعِیْدٍ ﴿83﴾

८३. तेरे रब की तरफ से चिन्हित (निशानज़दा) थे और वे उन ज़ालिमों से ज़रा भी दूर न थे।

وَاِلٰی مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا ؕ قَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَیْرُهٗ ؕ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْیَالَ وَالْمِیْزَانَ اِنِّیْۤ اَرٰىكُمْ بِخَیْرٍ وَّاِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَیْكُمْ عَذَابَ یَوْمٍ مُّحِیْطٍ ﴿84﴾

८४. और (हम ने) मदयन वालों की तरफ़ उन के भाई शुऐब को (भेजा) उस ने कहा हे मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नही, और तुम नाप-तौल में भी कमी न करो,[1] मैं तुम्हें ख़ुशहाल देख रहा हूँ, और मुझे तुम पर घेरने वाले दिन के अज़ाब का डर भी है।

---

[1] तौहीद की दावत देने के बाद उस क़ौम में जो खुली चारित्रक (अख़लाक़ी) ख़राबी नाप-तौल में कमी की थी उस से उन्हें रोका। उन का यह अख़लाक़ था कि अगर कोई उन के पास कोई चीज़ बेचने के लिये आता तो उस से ज़्यादा चीज ले लेते और अगर कोई ग्राहक ख़रीदने आता तो उस से नाप-तौल में कमी करते।

८५. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! नाप-तौल इंसाफ़ से पूरा-पूरा करो, लोगों को उनकी चीजें कम न दो, और ज़मीन में फ़साद और ख़राबी न मचाओ।

وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ (85)

८६. अल्लाह तआला का हलाल किया हुआ बाक़ी फ़ायेदा तुम्हारे लिये बहुत ही अच्छा है अगर तुम ईमानदार हो[1] मैं कोई तुम्हारा निगराँ (और हक़दार) नहीं हूँ।

بَقِيَّتُ اللّٰهِ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۚ
وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ (86)

८७. उन्होंने जवाब दिया कि हे शुऐब! क्या तेरी सलात[2] तुझे यही हुक्म देती है कि हम अपने बुज़ुर्गों के देवताओं को छोड़ दें और हम अपने माल में जो कुछ करना चाहे उस का करना भी छोड़ दें, तू तो बड़ा समझदार और नेक चलन है।

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ اَصَلٰوتُكَ تَاْمُرُكَ اَنْ نَّتْرُكَ
مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ اَوْ اَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ اَمْوَالِنَا
مَا نَشٰٓؤُا ۭ اِنَّكَ لَاَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ (87)

८८. कहा कि ऐ मेरी क़ौम! देखो तो अगर मैं अपने रब की तरफ़ से खुला सुबूत लिए हुए हूँ और उस ने अपने पास से अच्छी रोज़ी दे रखी है, मेरी कभी यह मर्ज़ी नहीं कि तुम्हारा ख़िलाफ़ करके ख़ुद उस चीज़ की तरफ़ झुक जाऊँ जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ, मेरा इरादा तो अपनी ताक़त भर सुधार करने का ही है, और मेरी तौफ़ीक़ अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ़ मैं आकर्षित हूँ।

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰي بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ
وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۭ وَمَآ اُرِيْدُ اَنْ اُخَالِفَكُمْ
اِلٰي مَآ اَنْهٰىكُمْ عَنْهُ ۭ اِنْ اُرِيْدُ اِلَّا الْاِصْلَاحَ
مَا اسْتَطَعْتُ ۭ وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ اِلَّا بِاللّٰهِ ۭ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ (88)

८९. और ऐ मेरी क़ौम (के लोगो)! कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरे विरोध में आकर उन अज़ाबों के पात्र (मुस्तहिक़) हो जाओ जो नूह की क़ौम और हूद की क़ौम और सालेह की क़ौम को आयी[3] और लूत की क़ौम तो तुम से ज़रा भी दूर नहीं।

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ
مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ۭ
وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ (89)

---

[1] بقیت الله से मुराद वह फ़ायेदा है जो नाप-तौल में किसी तरह की कमी किये बिना ईमानदारी के साथ सौदा देने के बाद हासिल होता है, यह चूँकि हलाल और पाक है और अज्र व सवाब भी इसी में है, इसलिये अल्लाह का बाक़ी कहा गया है।

[2] صلاۃ से मुराद इबादत, धर्म या क़ुरआन पढ़ना है।

[3] यानी उन का मक़ाम तुम से दूर नहीं, या उस सबब मैं तुम से दूर नहीं, जो उन के ऊपर अज़ाब का सबब बना।

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ ۚ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ (90)

९०. और तुम अपने रब से मग़फ़िरत तलब करो और उसकी तरफ़ झुक जाओ, यक़ीन करो कि मेरा रब बहुत रहम और बहुत प्रेम करने वाला है।

قَالُوا يَا شُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيرًا مِمَّا تَقُولُ وَإِنَّا لَنَرَاكَ فِينَا ضَعِيفًا ۖ وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ (91)

९१. उन्होंने कहा हे शुऐब! तेरी ज़्यादातर बातें हमारी समझ में नहीं आतीं, और हम तो तुझे अपने अंदर बहुत कमज़ोर पाते हैं, अगर तेरे क़बीले का आदर न होता तो हम तो तुझे पथराव कर देते,[1] और हम तुझे कोई बाइज़्ज़त इंसान नहीं समझते।

قَالَ يَا قَوْمِ أَرَهْطِي أَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَاتَّخَذْتُمُوهُ وَرَاءَكُمْ ظِهْرِيًّا ۖ إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ مُحِيطٌ (92)

९२. उन्होंने जवाब दिया कि हे मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुम्हारे नज़दीक मेरे क़बीले के लोग अल्लाह से भी ज़्यादा बाइज़्ज़त हैं कि तुम ने उसे पीठ के पीछे डाल दिया है, बेशक मेरा रब जो कुछ तुम कर रहे हो सब को घेरे हुए हैं।

وَيَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ۖ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ (93)

९३. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो ! अब तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ, मैं भी काम कर रहा हूँ, तुम्हें अनक़रीब मालूम हो जायेगा कि किस के पास वह अज़ाब आता है जो उसे अपमानित (ज़लील) कर दे और कौन है जो झूठा है? तुम इंतेज़ार करो और मैं भी तुम्हारे साथ इंतेज़ार कर रहा हूँ।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جَاثِمِينَ (94)

९४. और जब हमारा हुक्म (अज़ाब) आ पहुँचा, हमने शुऐब को और उनके साथ सभी ईमानवालों को अपनी ख़ास रहमत से नजात अता की और ज़ालिमों को कड़ी चिंघाड़ के अज़ाब ने आ दबोचा,[2] जिस से वह अपने घरों में औंधे पड़े हुए बाक़ी रह गये।

---

[1] हज़रत शुऐब का वंश कहा जाता है कि उनका मददगार नहीं था, लेकिन वह क़बीला कुफ़्र (अधर्म) और शिर्क में अपनी क़ौम के साथ था, इसलिये अपना सहधर्मी (हम मज़हब) होने के सबब उस जाति का एहतेराम, इसलिए हज़रत शुऐब के साथ कड़ा अख़लाक़ और उन्हें नुक़सान पहुँचाने में रुकावट था।

[2] इसी चीख़-चिंघाड़ से उन के दिल टुकड़े-टुकड़े हो गये और वे मर गये, उस के बाद भूकम्प (ज़लज़ला) भी आया, जैसाकि सूरः आराफ़-९१ और सूरः अनकबूत-३७ में है।

كَانْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۗ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ﴿95﴾

९५. जैसेकि वह उन घरों में कभी बसे ही न थे, होशियार रहो, मदयन के लिये भी वैसी ही दूरी हो जैसी दूरी समूद की हुई।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿96﴾

९६. और बेशक हम ने ही मूसा को अपनी आयतों और रौशन दलीलों के साथ भेजा था।

اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ﴿97﴾

९७. फ़िरऔन और उसके मुखियाओं की तरफ़, फिर भी उन लोगों ने फ़िरऔन के हुक्मों की इत्तेबा की और फ़िरऔन का कोई हुक्म जायेज़ और ठीक था ही नहीं।

يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۗ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ﴿98﴾

९८. वह तो क़यामत (प्रलय) के दिन अपनी जाति का अगुवा बनकर उन सब को नरक में जा खड़ा करेगा[1] वह बहुत बुरा घाट है,[2] जिस पर ला खड़े किये जायेंगे।

وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ﴿99﴾

९९. और उन पर इस दुनिया में भी लानत हुई और क़यामत के दिन भी, कितना बुरा इंआम है जो दिया गया।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ﴿100﴾

१००. बस्तियों की यह कुछ ख़बर जो हम तेरे सामने बयान कर रहे हैं, उन में से कुछ मौजूद हैं और कुछ कटी फ़सल की तरह हो गयी हैं।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۗ وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ﴿101﴾

१०१. और हम ने उन पर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि ख़ुद ही उन्होंने अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया, और उन्हें उनके देवताओं ने कोई फ़ायेदा नहीं पहुँचाया, जिन्हें वे अल्लाह के सिवाय पुकारते थे, जबकि तेरे रब का हुक्म आ पहुँचा, बल्कि उन्होंने उनका नुक़सान ही बढ़ा दिया।

---

[1] यानी फ़िरऔन जिस तरह दुनिया में उसका अगुवा और मुखिया था, क़यामत के दिन भी यह आगे-आगे ही होगा और अपनी क़ौम को अपने नेतृत्व (रहनुमाई) में नरक में लेकर जायेगा।

[2] وِرْدٌ पानी के घाट को कहते हैं, जहाँ प्यासे जाकर अपनी प्यास बुझाते हैं, लेकिन यहाँ नरक को ورد कहा गया है, مَوْرُوْدٌ वह जगह या घाट यानी नरक जिस में लोग ले जाये जायेंगे यानी जगह भी बुरा और जाने वाले भी बुरे।

وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى وَهِىَ ظٰلِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗۤ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ﴿102﴾

१०२. और तेरे रब की पकड़ का यही नियम है, जबकि वह बस्तियों में रहने वाले जालिमों को पकड़ता है, बेशक उस की पकड़ दुखदायी और सख़्त कड़ी है।

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ﴿103﴾

१०३. बेशक इस में उन लोगों के लिये नसीहत है, जो क़यामत (प्रलय) के अज़ाब से डरते हैं, वह दिन जिस में सब लोग जमा किये जायेंगे और वह, वह दिन है जिस में सब हाज़िर किये जायेंगे।

وَمَا نُؤَخِّرُهٗۤ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ﴿104﴾

१०४. और उसे हम जो देर करते हैं, वह सिर्फ़ एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिये है।

يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِىٌّ وَّسَعِيْدٌ ﴿105﴾

१०५. जिस दिन वह आ जायेगी किसी को हिम्मत न होगी कि अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई बात भी कर ले, तो उन में से कोई बदनसीब होगा और कोई ख़ुशनसीब।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِى النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ۙ ﴿106﴾

१०६. तो जो बदनसीब हुए वे नरक में होंगे, वहाँ उनकी धीमी और ऊँची चीख़ होगी।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ﴿107﴾

१०७. वे वहीं हमेशा रहने वाले हैं, जब तक आकाश और धरती बरक़रार रहें,[1] सिवाय उस वक़्त के जो तुम्हारे रब की मर्ज़ी हो, बेशक तेरा रब जो कुछ चाहे कर डालता है।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِى الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ﴿108﴾

१०८. और जो ख़ुशनसीब किये गये, वे स्वर्ग में होंगे जहाँ वे हमेशा रहेंगे जब तक आकाश और धरती बाक़ी रहे, लेकिन जो तेरा रब चाहे, यह न ख़त्म होने वाली बख़्शिश है।

[1] इन लफ़्ज़ों से कुछ लोगों में यह भ्रम हुआ है कि काफ़िरों के लिये नरक का अज़ाब दायमी नहीं है, बल्कि एक वक़्त तक है यानी जब तक धरती और आकाश का वजूद रहेगा, लेकिन यह बात सही नहीं है क्योंकि यहाँ ما دامت السماوات و الارض अरब वासियों की रोज़आना बोलचाल और मुहाविरे के अनुसार (मुताबिक़) उतरा है।

फ़लाअतकु फ़ी मिर्यतिम मिम्मा यअबुदु हाउलाइ मा यअबुदूना इल्ला कमा यअबुदु आबाउहुम मिन क़ब्लु व इन्ना लमुवफ़्फ़ूहुम नसीबहुम ग़ैरा मन्क़ूस (109)

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ﴿109﴾

१०९. इसलिये आप उन चीजों से शक्रो शुब्हा में न रहें, जिन्हें ये लोग पूज रहे हैं, उनकी इबादत तो इस तरह है जिस तरह इनके बुजुर्गों की इस से पहले थी, हम उन सब को पूरा-पूरा हिस्सा बिना कमी के देने वाले ही हैं।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿110﴾

११०. बेशक हम ने मूसा को किताब अता की, फिर उस में इख़्तेलाफ़ किया गया, अगर पहले ही आप के रब की बात लागू न हो गई होती तो निश्चय ही उनका फ़ैसला कर दिया जाता, उन्हें तो इस में शक़ लग रहा है (ये तो दुविधा में हैं)।

وَاِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ اَعْمَالَهُمْ ؕ اِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿111﴾

१११. और बेशक उन में से हर एक को (जब उन के सामने जायेगा तो) आप का रब उसे उस के अमलों (कर्मों) का पूरा बदला अता करेगा, बेशक वे जो कुछ कर रहे हैं उन से वह बाख़बर है।

فَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿112﴾

११२. बस आप अडिग रहिये जैसाकि आप को हुक्म दिया गया है, और वे लोग भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा-याचना) कर चुके हैं। होशियार! तुम हद से न बढ़ना,[1] अल्लाह तुम्हारे सारे अमलों को देख रहा है।

وَلَا تَرْكَنُوْٓا اِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ اَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿113﴾

११३. और देखो ज़ालिमों की तरफ़ कभी न झुकना, वर्ना तुम्हें भी आग की लौ लग जायेगी,[2] और अल्लाह के सिवाय तुम्हारी मदद करने वाला न खड़ा हो सकेगा और न तुम्हें मदद दी जायेगी।

[1] इस आयत में नबी ﷺ और ईमानवालों को एक तो मजबूत रहने की नसीहत दी जा रही है, जो दुश्मन का सामना करने के लिये एक बहुत बड़ा हथियार है।

[2] इसका मतलब यह है कि जालिमों के साथ नर्मी और तारीफ़ करके उन से मदद न लो। इस से उनको यह एहसास होगा कि जैसे तुम उनकी दूसरी बातों को भी प्यारा समझते हो। इस तरह यह तुम्हारा एक बड़ा गुनाह बन जायेगा जो तुम्हें भी उन के साथ नरक की आग का हक़दार बना सकता है।

وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِينَ ﴿114﴾

११४. और दिन के दोनों किनारों में नमाज कायम रख और रात की कई घड़ियों में भी,[1] बेशक नेकियाँ बुराईयों को दूर कर देती है,[2] यह नसीहत है नसीहत हासिल करने वालों के लिये।

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿115﴾

११५. और आप सब्र कीजिये, बेशक अल्लाह (तआला) नेकी करने वालों का फल बरबाद नहीं करता।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِن قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةٍ يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّنْ أَنجَيْنَا مِنْهُمْ ۗ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿116﴾

११६. तो क्यों न तुम से पहले के युग के लोगों में से ऐसे भलाई करने वाले लोग हुए जो धरती में फ़साद फैलाने से रोकते, सिवाय उन कुछ के जिन्हें हम ने उन में से नजात अता की थी, जालिम लोग तो उस चीज के पीछे पड़ गये, जिस में उन्हें सम्पन्नता (आसूदगी) दी गई थी और वे पापी थे।

---

[1] 'दोनों किनारों' से मुराद कुछ ने सुबह और मगरिब (सूर्यास्त), कुछ ने सिर्फ़ इशा (रात्रि) और कुछ ने मगरिब (सूर्यास्त) और इशा दोनों का वक़्त लिया है। इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं कि मुमकिन है कि यह आयत मेराज से पहले उतरी हो, जिस में पाँच नमाजें फ़र्ज की गयीं, क्योंकि इस से पहले केवल दो ही नमाजें फ़र्ज थीं, एक सूरज निकलने से पहले और एक सूरज डूबने से पहले और रात के पिछले हिस्से में तहज्जुद की नमाज, फिर तहज्जुद की नमाज आम मुसलमानों से माफ़ कर दी गई, फिर उस तहज्जुद नमाज की फ़रजियत कुछ के क़ौल के अनुसार आप से भी ख़त्म कर दी गई। (इब्ने कसीर)

[2] जिस तरह से हदीसों में भी इसको तफ़सील से बयान किया गया है। जैसे "पाँच नमाजें, जुमअ: (शुक्रवार) से जुमअ: (शुक्रवार) तक और रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक, इन के बीच होने वाले गुनाहों को दूर कर देने वाले हैं, अगर बड़े गुनाह से बचा जाये" (सहीह मुस्लिम किताबुत तहारत.....) एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

"बताओ! अगर तुम में किसी के दरवाजे के सामने एक बड़ी नहर बहती हो, वह हर दिन उस में पाँच बार गुस्ल करता हो, क्या उस के जिस्म पर उस के बाद मैल-कुचैल बाक़ी रह जायेगी।" सहाबा (आप के साथियों) ने जवाब दिया, "नहीं" आप ﷺ ने फ़रमाया :

इसी तरह पाँच नमाजें हैं, उन के जरिये अल्लाह तआला गुनाहों और गल्तियों को मिटा देता है। (सहीह बुख़ारी, किताबुल मवाक़ीत, बाबुस्सलवातिल ख़मसे कफ़्फ़ारतुन (और) मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबुल मश्ये इलस्सलाते तुमहा बिहिल ख़ताया व तुरफ़आ बिहिद दरजातु)

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّ اَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ﴿117﴾

११७. आप का रब ऐसा नहीं कि किसी बस्ती को ज़ुल्म से तबाह कर दे, जबकि वहाँ के लोग परहेज़गार हों।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ﴿118﴾

११८. और अगर आप का रब चाहता तो सब लोगों को एक रास्ते पर एक उम्मत कर देता, वे तो हमेशा (सदैव) मुख़ालफ़त करने वाले ही रहेंगे।

اِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ؕ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿119﴾

११९. सिवाय उन के जिन पर आप का रब रहम करे, उन्हें तो इसीलिये पैदा किया है, और आप के रब की यह बात पूरी है कि मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों सब से भर दूँगा।

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿120﴾

१२०. और रसूलों की सब हालतें हम आप के सामने आप के दिल के सुकून के लिए बयान कर रहे हैं, आप के पास इस सूरः (अंश) में भी हक़ पहुँच चुका, जो नसीहत और उपदेश (वाज़) है ईमानवालों के लिए।

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ﴿121﴾

१२१. और ईमान न लाने वालों से कह दीजिये कि तुम लोग अपने तौर से अमल किये जाओ, हम भी अमलों में लीन (मशग़ूल) हैं।

وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿122﴾

१२२. और तुम भी इंतेज़ार करो, हम भी इंतेज़ार कर रहे हैं।

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَيْهِ يُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿123﴾

१२३. और आकाशों और धरती का इल्मे ग़ैब अल्लाह (तआला) को ही है, और सारे कामों का लौटाना भी उसी की तरफ़ है, इसलिए तुझे उसी की इबादत (उपासना) करनी चाहिए और उसी पर भरोसा रखना चाहिये और तुम जो कुछ करते हो उस से अल्लाह (तआला) अन्जान नहीं।

सूरतु यूसुफ़-१२

سُوْرَةُ يُوْسُفَ

सूरः यूसुफ़ मक्का में नाज़िल हुई और इस की एक सौ ग्यारह आयतें और बारह रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. अलिफ़॰ लाम॰ रा॰, यह रौशन किताब की आयतें हैं।

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿1﴾

२. बेशक हम ने इसे अरबी क़ुरआन उतारा है कि तुम समझ सको।[1]

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿2﴾

३. हम आप के सामने सब से अच्छा बयान पेश करते हैं, इस वजह से कि हम ने आप की तरफ़ यह क़ुरआन वह्यी (प्रकाशना) के ज़रिये उतारा है और बेशक इससे पहले आप अंजानों में से थे।[2]

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖ وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ ﴿3﴾

---

[1] आसमानी किताबों को उतारने का मक़सद लोगों को हिदायत और निर्देशन (रहनुमाई) देना है, और यह मक़सद तभी हासिल हो सकता है, जब वह किताब उस भाषा में हो जिस को वे समझ सकें, इसलिये सभी आसमानी किताबें उस क़ौम की अपनी भाषा में उतारी गयीं, जिस क़ौम की हिदायत के लिये वह उतारी गई थीं। क़ुरआन करीम के पहले मुख़ातब लोग अरबवासी थे, इसलिये क़ुरआन भी अरबी भाषा में उतारा गया, इस के सिवाय अरबी भाषा अपनी तफ़सीर, असर और बयान की बुनियाद पर दुनिया की दूसरी भाषाओं से बेहतर भाषा है, इसीलिये अल्लाह तआला ने इस बेहतर किताब (क़ुरआन मजीद) को बेहतर भाषा (अरबी) में बेहतर रसूल (हज़रत मोहम्मद ﷺ) पर बेहतर फ़रिश्ते (जिब्रील) के ज़रिये नाज़िल किया, और मक्का नगर जहाँ इस की शुरूआत हुई, दुनिया के अच्छे नगरों में अच्छा नगर है और जिस महीनें में इस का नुज़ूल होना शुरु हुआ, वह भी अच्छा महीना रमज़ान का है।

[2] क़ुरआन करीम के इन लफ़्ज़ों से भी वाज़ेह होता है कि नबी करीम ﷺ को ग़ैब का इल्म नहीं था, वरना अल्लाह तआला आप को अंजान न कहता। दूसरी बात यह मालूम हुई कि आप ﷺ अल्लाह के सच्चे नबी हैं, क्योंकि आप ﷺ पर वह्यी (प्रकाशना) के ज़रिये ही इस सत्यकथा का बयान किया गया है, आप ﷺ न किसी के शार्गिद थे कि किसी गुरू से सीख कर बयान कर देते, और न किसी दूसरे से ही ऐसा रिश्ता था कि जिस से सुनकर तारीख़ का यह वाक़ेआ उस के ख़ास हिस्सों के साथ आप ﷺ प्रसारित कर देते, यह बेशक अल्लाह तआला ही ने वह्यी (प्रकाशना) के ज़रिये आप ﷺ पर उतारा है, जैसाकि इस जगह पर वाज़ेह किया गया है।

٤. जबकि यूसुफ़ ने अपने बाप से बताया कि पिताजी मैंने ग्यारह सितारों को और सूरज-चाँद को देखा कि वे सभी मुझे सज्दा कर रहे हैं।

اِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ اِنِّيْ رَاَيْتُ اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَاَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ ﴿4﴾

५. (याक़ूब ﷺ ने) कहा कि हे मेरे प्यारे बेटे! अपने इस ख़्वाब की चर्चा अपने भाईयों से न करना, ऐसा न हो कि वे तेरे साथ कोई छल करें,[1] शैतान तो इंसान का खुला दुश्मन है।

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلٰۤى اِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ؕ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿5﴾

६. और इसी तरह तेरा रब तुझे मुन्तख़ब करेगा और तुझे मामला (बात) समझने (यानी स्वप्नफल बताने) की भी नसीहत देगा और अपनी नेमत तुझे पूरी तरह से अता करेगा[2] और याक़ूब के परिवार को भी जैसाकि उस ने इससे पहले तेरे दो बुज़ुर्गों यानी इब्राहीम और इसहाक़ को भी भरपूर नेमत अता की, बेशक तेरा रब बड़े इल्म वाला और बहुत हिक्मत वाला है।

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَعَلٰۤى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَاۤ اَتَمَّهَا عَلٰۤى اَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿6﴾

७. बेशक यूसुफ़ और उस के भाईयों में सवाल करने वालों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं।

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿7﴾

८. जबकि उन्होंने कहा कि यूसुफ़ और उसका भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारा है, अगरचे हम लोग ताक़तवर जमात हैं, कोई शक नहीं कि हमारे बाप वाज़ेह ग़लती पर हैं।

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ﴿8﴾

९. यूसुफ़ को क़त्ल कर दो या उसे (अज्ञात) जगह पर पहुँचा दो, ताकि तुम्हारे बाप का ध्यान तुम्हारी तरफ़ ही हो जाये, उस के बाद तुम भले हो जाना।

اقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِ اطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ ﴿9﴾

---

[1] हज़रत याक़ूब ने ख़्वाब से यह अंदाज़ा लगा लिया कि उन का यह बेटा बड़ी शान वाला होगा, इसलिये उन्हें डर हुआ कि उस की इस अज़मत का अंदाज़ा लगाकर उस के दूसरे भाई उसे कोई नुक़सान न पहुँचाये, इस सबब उन्होंने इस ख़्वाब की चर्चा करने से रोक दिया।

[2] इस से मुराद नुबूअत है, जो हज़रत यूसुफ़ ﷺ को अता की गयी, या वे ईनाम हैं जिन के मिस्र में यूसुफ़ ﷺ हक़दार बने।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيَٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِن كُنتُمْ فَٰعِلِينَ ﴿10﴾

१०. उन में से एक ने कहा कि यूसुफ़ को क़त्ल तो न करो बल्कि किसी अंधे कुऐं की तली में डाल आओ[1] कि उसे कोई यात्रियों का गिरोह उठा ले जाये, अगर तुम्हें करना ही है तो इस तरह करो।

قَالُوا يَٰٓأَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَىٰ يُوسُفَ وَإِنَّا لَهُ لَنَٰصِحُونَ ﴿11﴾

११. उन्होंने कहा कि हे पिता! आख़िर आप यूसुफ़ के बारे में हम पर यक़ीन क्यों नहीं करते, हम तो उस के शुभचिन्तक (ख़ैरख़्वाह) हैं।

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهُ لَحَٰفِظُونَ ﴿12﴾

१२. कल आप उसे ज़रूर हम लोगों के साथ भेज दीजिये कि ख़ूब खाये-पिये और खेले[2] उसकी हिफ़ाज़त के हम ज़िम्मेदार हैं।

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِيٓ أَن تَذْهَبُوا بِهِۦ وَأَخَافُ أَن يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنتُمْ عَنْهُ غَٰفِلُونَ ﴿13﴾

१३. (याक़ूब ने) कहा कि उसे तुम्हारा ले जाना मेरे लिये बहुत दुखद होगा, मुझे यह भी डर लगा रहेगा कि तुम्हारी लापरवाही में उसे भेड़िया खा जाये।

قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّآ إِذًا لَّخَٰسِرُونَ ﴿14﴾

१४. उन्होंने जवाब दिया कि हम जैसे बड़े ताक़तवर गिरोह की मौजूदगी में भी अगर उसे भेड़िया खा जाये तो हम बिल्कुल निकम्मे हुए।

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِۦ وَأَجْمَعُوٓا أَن يَجْعَلُوهُ فِي غَيَٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُم بِأَمْرِهِمْ هَٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿15﴾

१५. फिर जब उसे ले चले और सभी ने मिल कर ठान लिया कि उसे सुनसान गहरे कुऐं की तह में फेंक दें, हम ने यूसुफ़ की तरफ़ वह्यी (प्रकाशना) की कि बेशक (वक़्त आ रहा है) कि तू उन्हें इस बात की ख़बर उस हालत में देगा कि वे जानते ही न हों।

[1] جُبّ कुऐं को और غَيَابَة उसकी तली और गहराई को कहते हैं, कुआं वैसे भी गहरा ही होता है और उस में गिरी हुई चीज़ किसी को दिखाई नहीं देती, जब उस के साथ कुऐं की गहराई का भी बयान किया तो जैसेकि अतिशयोक्ति (मुबालग़ा) का प्रदर्शन (इज़हार) किया।

[2] खेल-कूद की तरफ़ आकर्षण (मैलान) इंसान की फ़ितरत में शामिल है, इसीलिये जायेज़ खेल-कूद पर अल्लाह तआला ने किसी दौर में भी रुकावट नहीं लगाया, इस्लाम में भी इन की इजाज़त है लेकिन प्रतिबन्धित (मशरूत तौर पर) यानी ऐसे खेल-कूद की आज्ञा है जो जायेज़ हैं जिन में दीनी नियमों के ज़रिये हराम न हों या हराम तक पहुँचने का ज़रिया न बनें। इसलिए हज़रत याक़ूब ने भी खेल-कूद की हद तक मना नहीं किया, लेकिन यह शक किया कि तुम लोग खेल-कूद में मशग़ूल हो जाओ और उसे भेड़िया खा जांये, क्योंकि खुले मैदान और रेगिस्तानों में वहां भेड़िये आम तौर से पाये जाते थे।

وَجَآءُوٓ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ﴿16﴾

१६. और रात (इशा) के वक़्त (वे सब) अपने बाप के पास रोते हुए पहुँचे।

قَالُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ ﴿17﴾

१७. और कहने लगे कि प्यारे पिताजी! हम आपस में दौड़ में लग गये और यूसुफ़ को सामान के पास छोड़ दिया तो भेड़िया उसे खा गया, आप तो हमारी बात पर यक़ीन करने वाले नहीं चाहे हम पूरे सच्चे ही हों।

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ۭ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ۭ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ۭ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿18﴾

१८. और यूसुफ़ के कुर्ते को झूठे ख़ून से भिगा कर लाये थे (पिता ने) कहा, (इस तरह नहीं) बल्कि तुम ने अपने मन से ही एक बात बना ली है, अब सब्र ही बेहतर है,[1] और तुम्हारी बनायी हुई बातों पर अल्लाह ही से मदद की दुआ है।

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ۭ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ۭ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿19﴾

१९. और एक मुसाफ़िर (यात्री) का गिरोह आया और उन्होंने अपने पानी लाने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल लटका दिया, कहने लगा वाह-वाह! ख़ुशी की बात है, यह तो एक बालक है,[2] उन्होंने उसे तिजारत का माल समझकर छिपा दिया और अल्लाह (तआला) उस से बाख़बर था जो वे कर रहे थे।

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۭ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ﴿20﴾

२०. और उन्होंने उसे बहुत ही कम दाम (यानी) गिनती के कुछ दिरहमों पर बेच डाला, वे तो यूसुफ़ के बारे में ज़्यादा रूचिहीन (बेरग़बत) थे।

[1] कहते हैं कि एक बकरी का बच्चा काट कर उस के ख़ून से यूसुफ़ की कमीज़ भिगा ली और यह भूल गये कि अगर भेड़िया यूसुफ़ को खाता तो कमीज़ भी फाड़ता, कमीज़ फटी ही नहीं थी, जिस को देखकर और साथ ही हज़रत यूसुफ़ के ख़्वाब और नुबूअत की ताक़त से अन्दाज़ा लगा कर हज़रत याक़ूब ने कहा कि यह घटना इस तरह घटित नहीं हुई है, जैसे तुम बयान कर रहे हो बल्कि यह तुम्हारी मनगढ़त है, फिर भी जो होना था हो चुका, हज़रत याक़ूब उस के विवरण (तफ़सील) से अंजान थे, इसलिये केवल सब्र के सिवाय कोई चारा न था और अल्लाह की मदद के अलावा कोई सहारा न था।

[2] وارد (वारिद) उस इंसान को कहते हैं जो मुसाफ़िरों के गिरोह के लिये पानी आदि का इंतेज़ाम करने के मक़सद से आगे-आगे चलता है ताकि ठीक जगह देखकर मुसाफ़िरों को ठहराया जा सके। यह वारिद (मुसाफ़िरों के लिये पानी का इंतेज़ाम करने वाला) जब कुऐं पर आया और अपना डोल नीचे लटकाया तो हज़रत यूसुफ़ ने उस की डोरी पकड़ ली, वारिद (जल-प्रबन्धक) ने एक सुन्दर बच्चे को देखा तो ऊपर खींच लिया और बहुत ख़ुश हुआ।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖٓ اَكْرِمِيْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْاَرْضِ ۫ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰٓى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿21﴾

२१. और अहले मिस्र में से जिस ने उसे ख़रीदा था उस ने अपनी बीवी से कहा कि इसे इज़्ज़त और एहतेराम के साथ रखो, बहुत मुमकिन है कि यह हमें फ़ायेदा पहुँचाये या हम इसे अपना बेटा ही बना लें, इस तरह हम ने (मिस्र की) धरती पर यूसुफ़ के पाँव जमाये कि हम उसे ख़्वाब की ताबीर का कुछ इल्म सिखा दें, अल्लाह अपने इरादे की पूर्ति में क़ुदरत रखता है, लेकिन ज़्यादातर लोग अन्जान होते हैं।

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿22﴾

२२. और जब (यूसुफ़) पूरी जवानी को पहुँच गये, हम ने उसे फ़ैसला की ताक़त और इल्म दे दिया, हम भलाई करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّيْٓ اَحْسَنَ مَثْوَايَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿23﴾

२३. और उस औरत ने जिस के घर यूसुफ़ थे, यूसुफ़ को फुसलाना शुरू किया कि वह अपने मन की हिफ़ाज़त करना छोड़ दे, और दरवाज़ा बन्द करके कहने लगी लो आ जाओ। (यूसुफ़ ने) कहा, अल्लाह बचाये! वह मेरा रब है, मुझे उस ने बहुत अच्छी तरह से रखा है, नाइंसाफ़ी करने वालों का भला नहीं होता।[1]

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ ﴿24﴾

२४. और उस औरत ने यूसुफ़ की इच्छा की और यूसुफ़ उसकी इच्छा करते, अगर वह अपने रब की दलील देख न लेते, इसी तरह हुआ इसलिये कि हम उस से बुराई और बेहयाई दूर कर दें, बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों मे से था।

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّاَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿25﴾

२५. और दोनों दरवाज़े की तरफ़ दौड़े, उस औरत ने यूसुफ़ का कपड़ा (कुर्ता) पीछे से खींच कर फाड़ दिया और उस औरत का शौहर दोनों को दरवाज़े के क़रीब ही मिल गया, तो कहने लगी कि जो इंसान तेरी बीवी के साथ बुरी इच्छा रखे, बस उसकी सज़ा यही है कि उसे

---

[1] यहाँ से हज़रत यूसुफ़ का एक नया इम्तेहान शुरू हुआ, मिस्री अज़ीज़ की बीवी जिस को उस के शौहर ने ख़ास तौर से कहा था कि यूसुफ़ को आदर-सम्मान के साथ रखे, वह हज़रत यूसुफ़ की ख़ूबसूरती पर मोहित हो गयी, और उन्हें गुनाह की प्रेरणा (तरग़ीब) देने लगी, जिसे हज़रत यूसुफ़ ने ठुकरा दिया।

बन्दी बना लिया जाये और दूसरा कोई सख़्त अज़ाब दिया जाये।

२६. (यूसुफ़ ने) कहा, यह औरत ही मुझे बहला फुसला कर (मेरी मनोकामना की हिफ़ाज़त से लापरवाह करना) चाहती थी, और औरत की जाति के एक आदमी ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हो तो औरत सच्ची है और यूसुफ़ झूठ बोलने वालों मे से है।

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِي عَنْ نَّفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿26﴾

२७. और अगर उसका कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है, तो औरत झूठी है और यूसुफ़ सच्चों में से है।

وَاِنْ كَانَ قَمِيصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿27﴾

२८. तो शौहर ने जो देखा कि कुर्ता पीछे से फटा है तो यह साफ़ कह दिया कि यह तो तुम औरतों की चाल है, बेशक तुम्हारे हथकंडे भारी हैं।

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۖ اِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ ﴿28﴾

२९. यूसुफ़, अब इस बात को आती-जाती करो, और (हे औरत)! अपने गुनाहों से माफ़ी मांग, बेशक तू गुनाहगारों में से है।

يُوسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۜ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْۢبِكِ ۖ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ﴿29﴾

३०. और नगर की औरतों में चर्चा होने लगी कि अज़ीज़ की बीवी अपने (युवक) गुलाम को अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिये बहलाने-फुसलाने में लगी रहती है, उसके दिल में यूसुफ़ का प्यार बैठ गया है, हमारी समझ से तो वह वाज़ेह ग़लती पर है।

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ اِنَّا لَنَرٰىهَا فِي ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿30﴾

३१. उस ने जब उनकी इस छलपूर्ण ग़ीबत को सुना तो उन्हें आमंत्रित (मदऊ) किया, और उन के लिये एक सभा का एहतेमाम किया, और उन में से हर एक को एक छुरी दे दी, और कहा कि हे यूसुफ़! इन के सामने चले आओ, उन औरतों ने जब उसे देखा तो बहुत बड़ा जाना और अपने हाथ काट लिये, और मुंह से निकल गया कि पाकी अल्लाह के लिये है, यह इंसान कभी भी नहीं, यह तो बेशक कोई बहुत बड़ा फ़रिश्ता है।[1]

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗ اَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۖ اِنْ هٰذَا اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ ﴿31﴾

[1] इस का यह मतलब नहीं कि फ़रिश्ते इंसान से शक्लो सूरत में अच्छे या बेहतर हैं, क्योंकि

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِىْ لُمْتُنَّنِىْ فِيْهِ ؕ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَاۤ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ﴿32﴾

३२. (उस वक़्त मिस्र के अज़ीज़ की बीवी ने) कहा कि यही है जिन के बारे में तुम मुझे बुरा भला कह रहीं थीं, मैंने हर तरह से इससे अपना मतलब पूरा करना चाहा, लेकिन यह बेदाग़ बचा रहा, और जो कुछ मैं इस से कह रही हूं अगर यह न करेगा तो बेशक यह बन्दी बना दिया जायेगा, और निश्चय यह बहुत बेइज़्ज़त होगा।

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَىَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِىْۤ اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّىْ كَيْدَهُنَّ اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿33﴾

३३. (यूसुफ़ ने) कहा कि ऐ मेरे रब! जिस बात की तरफ़ यह औरतें मुझे बुला रही हैं, उस से तो जेल मुझे ज़्यादा प्यारा है, अगर तूने उन के छल मुझ से दूर न किया तो मैं इन की तरफ़ आकर्षित (मायेल) हो जाऊंगा, और बिल्कुल बेवक़ूफ़ों में शामिल हो जाऊंगा।[1]

فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿34﴾

३४. उस के रब ने उसकी दुआ क़ुबूल कर ली और उन औरतों के छल से उसे बचा लिया, बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है।

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿35﴾

३५. फिर उन सभी निशानियों के देख लेने के बाद उन्हें यही भला लगा कि यूसुफ़ को कुछ वक़्त के लिये जेल में रखें।[2]

फ़रिश्तों को इंसानों ने देखा ही नही है, इस के अलावा इंसानों के लिये ख़ुद अल्लाह ने क़ुरआन में वाज़ेह किया है कि हम ने उसे सब से अच्छे रूप में पैदा किया है, इन औरतों ने इंसान की शक्ल को इसलिये नकारा किया कि उन्होंने ख़ूबसूरती का रूप जो इंसान के रूप में देखा उन की आंखों ने कभी नहीं देखा था, और उन्होंने फ़रिश्तों से मुआज़ना इसलिये किया कि आम लोग यही समझते है कि फ़रिश्ते गुण और रूप के मुताबिक़ ऐसा रूप रखते हैं जो इंसान के रूप से बेहतर है। इस से यह मालूम होता है कि नबियों के ग़ैर मामूली सिफ़ात और गुणों के सबब उन्हें मानव जाति से निकाल कर नूर वाली मख़लूक़ में रख देना हर युग के ऐसे लोगों का काम रहा है जो नुबूअत और उस के पद से अंजान होते हैं।

[1] हज़रत यूसुफ़ ने यह दुआ अपने दिल में की, क्योंकि एक ईमानवाले के लिये दुआ भी एक हथियार है। हदीस में आता है सात आदमियों को अल्लाह तआला अर्श की छाया अता करेगा, उन में से एक वह आदमी है जिसे एक ऐसी औरत गुनाह के लिये बुलाये जो ख़ूबसूरत भी हो और ऊंचे पद पर आसीन भी हो, लेकिन वह उस के जवाब में यह कह दे कि मैं तो "अल्लाह से डरता हूं।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल आज़ान, बाबु मन जलस फ़िल मस्जिद यन्तज़िरूस्सला: व फ़ज़लुल मस्जिद और सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़कात बाबु फ़ज़ल एख़फ़ा इस्सदक़:)

[2] सच्चाई और पकीज़गी वाज़ेह हो जाने के बाद भी यूसुफ़ को जेल में डालने का यही सबब उन के सामने हो सकता था कि मिस्री अज़ीज़ हज़रत यूसुफ़ को अपनी पत्नी से दूर रखना

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۖ قَالَ اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۖ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ (36)

३६. और उस के साथ ही दो दूसरे नौजवान जेल में आये, उन में से एक ने कहा कि मैंने ख़्वाब में अपने आप को शराब निचोड़ते हुए देखा है, और दूसरे ने कहा कि मैंने अपने आप को देखा है कि मैं अपने सिर पर रोटी उठाये हुए हूँ जिसे पक्षी खा रहे हैं, हमें आप इसका फल बतायें, हमें तो आप ख़ूबी वाले इंसान मालूम होते हैं।[1]

قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ۚ ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۚ اِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ (37)

३७. (यूसुफ़ ने) कहा तुम्हें जो खाना दिया जाता है उस के तुम्हारे पास पहुँचने से पहले ही मैं तुम्हें उसका फल बता दूँगा, यह सब कुछ उस इल्म का नतीजा है जो मुझे मेरे रब ने सिखाया है, मैंने उन लोगों का दीन छोड़ दिया है, जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और आख़िरत को भी क़ुबूल नहीं करते हैं।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ (38)

३८. मैं अपने बाप और बुज़ुर्गों के दीन का पैरोकार हूँ, यानी इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब के दीन का, हमें कभी यह क़ुबूल नहीं कि हम अल्लाह तआला के साथ किसी को भी साझीदार बनायें,[2] हम पर और दूसरे सभी लोगों पर अल्लाह (तआला) का यह ख़ास फ़ज़्ल है, लेकिन ज़्यादातर लोग नाशुक्रे होते हैं।

चाहता होगा ताकि फिर वह यूसुफ़ को अपनी चाल में फंसानें की कोशिश न करे, जैसाकि उस का ऐसा इरादा था।

[1] यह दोनों नौजवान राज दरबार से तआल्लुक़ रखते थे, एक शराब पिलाने पर तैनात था, दूसरा रोटी बनाता था, किसी वजह से उन्हें जेल में डाल दिया गया था। हज़रत यूसुफ़ अल्लाह के पैग़म्बर थे, दीन की दावतो तबलीग़ के साथ-साथ इबादत, तपस्या, तक़्वा, सच्चाई, किरदार और अमल में दूसरे क़ैदियों से बेहतर थे, इस के अलावा ख़्वाबों की ताबीर का इल्म अल्लाह ने अता कर रखा था, इन दोनों ने ख़्वाब देखा तो फ़ितरी तौर से वे हज़रत यूसुफ़ के पास आये और कहा कि आप हमें अच्छे लोगों में से दिखायी दे रहे हैं, हमें हमारे ख़्वाबों की ताबीर बताईये। محسن का एक मलतब कुछ ने यह भी किया है कि आप ख़्वाबों की ताबीर अच्छी बताते हैं।

[2] यह वही तौहीद की दावत और मूर्तिपूजन का खण्डन (तरदीद) है, जो हर नबी की असल और पहली शिक्षा (नसीहत) और दावत होती थी।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿39﴾

३९. ऐ मेरे जेल के साथियो! क्या कई तरह के कई देवता अच्छे हैं या एक अल्लाह ज़बरदस्त ताक़तवर?

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۭ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿40﴾

४०. उस के सिवाय जिनकी इबादत तुम कर रहे हो वे सब नाम ही के हैं जो तुम ने और तुम्हारे बुज़ुर्गों ने ख़ुद गढ़ लिया है, अल्लाह तआला ने इन का कोई सुबूत नहीं उतारा[1] फ़ैसला देना अल्लाह (तआला) ही का काम है, उस का हुक्म है कि तुम सभी उसके सिवाय किसी की इबादत (वंदना) न करो, यही सच्चा दीन है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ۭ قُضِيَ الْاَمْرُ الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ﴿41﴾

४१. ऐ मेरे जेल के साथियो! तुम दोनों में से एक तो अपने राजा को शराब पिलाने के लिये तैनात हो जायेगा, लेकिन दूसरे को फांसी दी जायेगी और पक्षी उसका सिर नोच-नोच कर खायेंगे, तुम दोनों जिस के बारे में पूछ रहे थे, उसका फ़ैसला हो गया।[2]

وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۡ فَاَنْسٰىهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ﴿42﴾

४२. और जिस के बारे में यूसुफ़ का ख़्याल था कि उन दोनों में से यह छूट जायेगा, उस से कहा कि अपने राजा से मेरी चर्चा भी कर देना, फिर उसे शैतान ने राजा से बयान करना भुला दिया और यूसुफ़ ने कई साल जेल में काटे।

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۭ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ﴿43﴾

४३. और राजा ने कहा कि मैंने ख़्वाब देखा है कि सात मोटी-ताज़ी गायें हैं जिन को सात दुबली-पतली सी गायें खा रही हैं, और सात बालियां हैं हरी-भरी, और सात दूसरी बिल्कुल सूखी हुईं। हे दरबारियो! मेरे इस ख़्वाब की ताबीर बताओ अगर तुम ख़्वाब की ताबीर बता सकते हो।

---

[1] इसका एक मतलब तो यह है कि उसका नाम देवता तुम ने ख़ुद रखा है, जबकि न वे देवता है न उन के बारे में अल्लाह की तरफ़ से कोई सुबूत ही उतरा है। दूसरा मतलब यह है कि उन देवताओं के जो कई नाम तुम ने रखे हैं, जैसे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, गंज बख़्श, शकरगंज वग़ैरह, यह सब तेरे अपने बनाये हुए हैं, उन का कोई सुबूत अल्लाह ने नहीं उतारा।

[2] यानी अल्लाह के ज़रिये लिखी तक़्दीर में पहले ही से लिखा था और जो फल मैंने बताया है यह आख़िर पूरा होकर रहेगा।

४४. उन्होंने जवाब दिया कि यह तो उड़ते हुए परीशाँ (व्यग्र) ख़्वाब हैं, और इस तरह के परीशाँ ख़्वाब की ताबीर जानने वाले हम नहीं।

قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ﴿44﴾

४५. और उन क़ैदियों में से छूटे हुए को एक वक़्त के बाद याद आ गया और कहने लगा, मैं तुम्हें इस की ताबीर बतला दूंगा, मुझे जाने की इजाज़त अता कीजिए।

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ﴿45﴾

४६. हे यूसुफ़! हे बड़े सच्चे यूसुफ़ ! आप हमें इस ख़्वाब की ताबीर बताईए कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली (अस्वस्थ) गायें खा रही हैं, और सात बिल्कुल हरी बालियाँ है और सात ही दूसरी भी बिल्कुल सूखी हैं, ताकि मैं वापस जाकर उन लोगों से कहूँ कि वे सभी जान लें।

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿46﴾

४७. (यूसुफ़ ने) जवाब दिया कि तुम सात साल लगातार आदत के मुताबिक अन्न बोना और उसे काटकर बालियों के साथ ही रहने देना, अपने खाने के लिये थोड़ी-सी तादाद के सिवाय।

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ ﴿47﴾

४८. उस के बाद सात साल बहुत सूखा के आयेंगे, वे उस अनाज को खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये जमा कर रखा था[1] सिवाय उस के जो थोड़े से तुम रोक रखते हो।[2]

ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ ﴿48﴾

---

[1] अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ को ख़्वाब की ताबीर का इल्म भी अता किया था, इसलिये वह इस ख़्वाब की तह तक जल्द पहुँच गये, उन्होंने मोटी और सेहतमंद गायों से मुराद सात साल ऐसे लिये जिन में ज़्यादा पैदावार होगी और सात कमज़ोर गायों से उस के विपरीत सात साल सूखा अकाल के, इसी तरह सात हरी बालियों से मुराद लिया कि धरती ज़्यादा पैदावार देगी और सात सूखी बालियों से मतलब यह लिया कि इन सात सालों में धरती में पैदावार नहीं होगी, और फिर उसके लिये तरीक़ा भी बताया कि सात साल तुम लगातार खेती करो और जो अनाज हो उसे काटकर बालियों के साथ रखो ताकि उनमें अनाज अधिक महफ़ूज़ रहे, फिर जब सात साल सूखे के आयेंगे तो यह अनाज तुम्हारे काम आयेगा, जिस को इकट्ठा तुम अब करोगे।

[2] مِمَّا تُحْصِنُوْنَ से मुराद बीज के लिये महफ़ूज़ दाने हैं जो दोबारा बोये जाते हैं।

४९. फिर इस के बाद जो साल आयेगा उस में लोगों पर बहुत बारिश होगी और उसमें (अंगूर का रस भी) बहुत निचोड़ेंगे।

ثُمَّ يَأْتِيْ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ (49)

५०. और राजा ने कहा कि उसे (यूसुफ़) को मेरे पास लाओ, जब संदेशवाहक (क़ासिद) उस (यूसुफ़) के पास पहुँचा तो उन्होंने कहा कि अपने राजा के पास वापस जाओ और उन से पूछो कि उन औरतों की सच्ची कहानी क्या है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे,[1] उन के छल को अच्छी तरह से जानने वाला मेरा रब ही है।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى رَبِّكَ فَسْئَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ؕ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ (50)

५१. (राजा ने) पूछा, ऐ औरतो! उस वक़्त की सच्ची कहानी क्या है? जब तुम छल करके यूसुफ़ को उस के मन से भटकाना चाहती थीं, उन्होंने साफ़ जवाब दिया कि (अल्लाह जानता है) हम ने यूसुफ़ में कोई बुराई नहीं पायी, फिर तो अज़ीज़ की बीवी भी बोल उठी कि अब तो सच्ची बात वाज़ेह हो गई है, मैंने ही उसे बहकाने की कोशिश की थी उस के दिल से, और बेशक वह सच्चों मे से हैं।

قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۫ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ (51)

५२. यह इस सबब से कि (अज़ीज़) को मालूम हो जाये कि मैंने उसके साथ विश्वासघात (ख़्यानत) नहीं किया और यह भी कि अल्लाह छल करने वालों की चाल नहीं चलने देता।

ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ (52)

[1] हज़रत यूसुफ़ ने देखा कि राजा अब मेहरबानी करना चाहता है तो उन्होंने इस तरह सिर्फ़ शाही मेहरबानी से जेल से निकलना नहीं चाहा, बल्कि अपने किरदार की बुलंदी और पाकीज़गी के साबित करने को प्राथमिकता (तरजीह) दी ताकि दुनिया के सामने आप के किरदार का ख़ूबसूरती और बुलंदी वाज़ेह हो जाये, क्योंकि अल्लाह की ओर से दावत देने वाले के लिये ये सच्चाई, पकीज़गी और नेक किरदार बहुत ज़रूरी है।